शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2013

हिंदी कविता और इतिहास

आनंद एस. शोधार्थी हिंदी (तुलनात्मक साहित्य)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

शोध संक्षेप

साहित्य किसी भी देश के समग्र जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज़ होता है। रचनाकारों की संवेदना अपने परिवेश में केंद्रित होता है, जिसकी परिणति साहित्यिक कृतियों में होती हैं। साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा गया है। अर्थात् देश में जो कुछ घटित होता है, वह न केवल इतिहास में ही प्रतिबिंबित होता है, बल्कि साहित्य में भी प्रतिबिंबित होता है। इतिहासकार इतिहास की इन्हीं घटनाओं को क्रमबद्ध करता है और साहित्यकार अपनी रचनाओं में उन घटनाओं के अंदर के सत्य को बताता है। इतिहास यदि संस्कृति को अंकित करती है तो साहित्य उसे अभिव्यक्ति देती है। अर्थात साहित्य में इतिहास की घटनाओं का, पत्रों का एक तरह से पुनर्जन्म होता है।

प्रस्तावना

"समय की शिला पर मधुर चित्र कितने, किसी ने बनाए, किसी ने मिटाए।

किसी ने लिखी आँसुओं की कहानी, किसी ने पढ़ा किंतु दो बूँद पानी।।"1

हिंदी कविता पर इतिहास का एवं इतिहास का हिंदी कविता पर किस तरह का प्रभाव रहा है, यह जानने से पहले इतिहास क्या है? इतिहास का कविता के साथ क्या संबंध है? यह जानना आवश्यक प्रतीत होता है। इतिहास कहते ही कुछ लोग इसे अतीत की घटनाओं और पात्रों की सूची मानते हैं, जबकि इतिहास न केवल अतीत की घटनाओं एवं पात्रों की सूची है बल्कि वह मनुष्य द्वार निर्मित समाज एवं संस्कृति के क्रमिक विकास का अध्ययन भी है। अतः इतिहास अतीत एवं वर्तमान के मध्य निरंतरता को बनाए रखने वाली एक प्रभावी माध्यम है, जिसकी सहायता से मानवसमाज के विविध पक्षों जैसे- धर्म, समाज, राजनीति, अर्थ, विज्ञान आदि के विषय में सम्यक् ज्ञान एवं दृष्टि को प्राप्त कर सकते हैं। इतिहास मानव समाज की प्रगति, मानव समाज को समझने एवं उसे बदलने का भी एक अनिवार्य माध्यम है। यह एक प्रयोगशाला है, जिसमें अतीत एवं वर्तमान के आधार पर एक अच्छे भविष्य के नवीन पथ का सर्जन संभव हो सके।

इतिहास को परिभाषित करने का प्रयास कई विद्धवानों ने किया है। "इतिहास के प्रथम व्याख्याता यूनानी विद्वान हिरोदोतस (Herodotus 545-456 Bc) ने इतिहास को 'खोज', 'गवेषणा' या 'अनुसंधान' के अर्थ में ग्रहण करते हुए, इसके चार लक्षण निर्धारित किए थे- 1. इतिहास वैज्ञानिक विधा है, अतः इसकी पद्धति आलोचनात्मक होती है, 2. यह मानव जाति से

संबंधित होने कारण मानवीय विधा (मानविकी) है। 3. यह तर्कसंगत विधा है, अतः इसमें तथ्य और निष्कर्ष प्रमाण पर आधारित होते हैं। 4. यह अतीत के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालता है, अतः यह शिक्षाप्रद विधा है। साथ ही इतिहास का लक्ष्य प्राकृतिक या भौतिक परिवर्तन की प्रक्रिया की व्याख्या करना है।"2 इतिहास जैसे रोचक, गूढ़ एवं वैज्ञानिक विषय का अध्ययन एवं अध्यापन करना एक बेहद कठिन कार्य है। अतीत के गहन अंधकार में छिपा हुए रहस्यों को उद्घाटित करना या उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करना इतिहासकार के लिए ही नहीं, बल्कि साहित्यकार के लिए भी कठिन होता है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अतीत में जो कुछ देखता है अथवा खोजता है उसमें उसकी व्यतिगत रुचि के फलस्वरूप उस युग की सामूहिक चेतना, उसके बौद्धिक विकास एवं उसकी भावात्मक प्रवृत्तियों का प्रभाव परिलक्षित होता है।

वस्तुतः अतीत के किसी भी तथ्य, तत्व एवं प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन व विश्लेषण को जो कि काल विशेष या कालक्रम की दृष्टि से किया गया हो उसे इतिहास कहा जा सकता है। अर्थात 'इतिहास' किसी व्यक्ति, समाज या देश की महत्त्वपूर्ण, विशिष्ट घटनाओं, तथ्यों आदि का कालक्रम से लिखा हुआ विवरण है, जिसके अंतर्गत हम जिस विषय का अध्ययन करते हैं उसमें अब तक घटित घटनाओं या उससे संबंध रखनेवाली घटनाओं का कालक्रमानुसार वर्णन होता है। दूसरे शब्दों में, मानव की विशिष्ट घटनाओं का नाम ही इतिहास है या फिर प्राचीनता से नवीनता की ओर आने वाली, मानवजाति से संबंधित घटनाओं का वर्णन इतिहास है। अतः इतिहास का लक्ष्य सदा अतीत की व्याख्या करते हुए विवेच्य वस्तु के विकास क्रम को स्पष्ट करना होता है।

इतिहास न केवल सजावट (यहाँ सजावट से मेरा तात्पर्य किसी व्यक्ति-विशेष का यशोगान या उसकी सानो-शौकत से है) की वस्तु होती है, बल्कि वह अनुभव, स्मृतियों, खून एवं चित्कारों से लथपथ एक ऐसा दस्तावेज होता है जिसकी उपेक्षा की भारी कीमत चुकानी पड़ती है। यह भी सत्य है कि इतिहास अपने आपको दोहराता है। जो इतिहास के श्याह-सफेद अध्यायों से सबक नहीं लेता, उसे समय का क्रूर चक्र अपने पैरों तले कुचल देता है।

भारतीय समाज में इतिहास की अवधारणा लेखन की अपेक्षा स्मृति के अधिक निकट रही है। इसकेलिए स्वयं इतिहास ही गवाह रहा है। साहित्य के इतिहास में अगर हम झांक कर देखें तो हमें यह तत्य उपलब्ध होते हैं कि पहले साहित्य की जो परंपरा रही है वह मौखिक ही रही है। उसके बाद ही उसे लिपिबद्ध किया गाय है। दरअसल हम जिसे साहित्य का इतिहास कहते हैं वह हमारी भारतीय परंपरा से प्राप्त स्मृतिबोध है, जो नाना प्रकार के पुराकथाओं, मिथकों, आस्थाओं, लोक धारणों तथा मनुष्य एवं प्रकृति के आदिम अंतः संबंधों की जीवंतता से प्राप्त हुआ है। ठीक उसी प्रकार से हिंदी कविता का इतिहास भी रहा है। वस्तुतः इतिहास में हिंदी कविता का स्वरूप मौखिक रहा है। वह गायकों, फकीरों, साधु-संतों द्वारा मौखिक से लिखित रूप में विकसित हुआ है। इसी विकसित प्रक्रिया का कविता का इतिहास पर तथा इतिहास का कविता पर प्रभाव रहा है।

जैसे कि पहले बताया गया है कि 'इतिहास' अतीत की घटनाओं के व्यवस्थित अध्ययन का नाम है, परंतु कुछ लोगों के लिए यह नीरस का विषय होता है। इसी नीरस भरे विषय को कवि सरस बनाता है। इतिहास में सुरक्षित चरित्रों, घटनाओं को कविताओं के द्वारा कवि जीवंत बनाता है। जैसे - झाँसी की रानी, झलकारीबाइ, 1987 का स्वतंत्रता संग्राम, भगतसिंह की फासी, नक्सलबाड़ी आंदोलन आदि। भारत के इतिहास में ऐसे अनेक चरित्र एवं घटनाएँ हैं जिन्हें कविताओं में निरूपित किया गया है। हिंदी के कवियों ने अपनी कविताओं के द्वारा अत्यंत सुचारु रूप से 'कविता और इतिहास' के अंतरू संबंधों को उद्घाटित किया है। जैसे भारतेंदु, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चैहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन, मैथिलीशरण गुप्त, प्रसाद, निराला, नागार्जुन आदि की कविताओं को देखा जा सकत है। साहित्यकारों के द्वारा जब ऐसे इतिहास का लेखन होता है तब समाज को एक निश्चित दिशा मिलती है।

उदाहरण के लिए, 1857 की घटना पर लिखी गई कविताओं को देखा जा सकता है। इतिहास में 1857 का विशेष महत्व है। 1857 से पहले ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध देशवासियों का संघर्ष शुरू हो चुका था, फिरभी 1857 की घटना ही एक ऐतिहासिक घटना के रूप में इतिहास के पन्नों में दर्ज हुई। पिछले डेढ़ सौ सालों में 1857 के इतिहास की कई परतें सामने आई। वस्तुतः पहले इस विद्रोह को मात्र सैनिक विद्रोह माना जाता रहा। परंतु इतिहासकारों के द्वारा दूँढे गए नए तथ्यों से, साहित्यकारों के द्वारा किए गए व्याख्याओं के चलते इस घटना में तथा इस घटना से संबंधित साहित्य में कई बदलाव आए है। जिसके चलते यह विद्रोह सिर्फ सैनिकों, राजा-रजवाड़ों, सामंतों का ही नहीं रहा, बल्कि किसानों, मजदूरों, स्त्रीयों, दलितों, आदिवासियों एवं आमजनता का भी रहा। यह एक ऐसी आग थी जो अपने समय के आर्थिक और सामाजिक कारणों के चलते तेजी से फैली और उसकी लपटें निरंतर उचि होती चली गई, और यहाँ आग पीढ़ी दर पीढ़ी में सुलगती रही। जिसके फलस्वरूर स्वतंत्रता का संग्राम हुआ, जनांदोलन हाओ रहे हैं। इस संदर्भ में ब्रिग्स का यह कहना सही प्रतीत होता है- "1857 का भारतीय सिपाही विद्रोह अपने आप में एक अभूतपूर्व शक्तिशाली घटना थी, जिसने पीढ़ियों तक जनमानस को प्रभावित किया। कालांतर में भी यह शासकों के लिए सबसे अमिट और आक्रांत करने वाली घटना बनी रही, जिसने उसकी सत्ता की वैधता को सबसे व्यापक चुनौती दी थी।"3

साहित्य के क्षेत्र में भी इस घटना के निरंतर बदलाव का भी काफी प्रभाव रहा, खास कर हिंदी कविता पर। 1857 की इस घटना को लेकर, इससे जुड़े हुए नायकों को लेकर कई कविताओं का सृजन किया गया। 1857 की प्रेरणा के तहत 'गदर अखबार', कि स्थापना की गई थी। "'गदर अखबार' में 1857 के बारे में क्रांतिकारी ढंग की कविताएं प्रकाशित होती थी। बाद में उनको 'गदर की गूँज' शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन कविताओं ने 1857 के प्रति साम्राज्यवादी नजरिए को पूरी तरह बदल दिया। जो पंजाबी आप्रवासी अपने को ब्रिटिश राज के वफादार सिपाही के रूप में देखते थे, इन कविताओं के प्रभाव के तहत वे ब्रिटिश राज से नफरत करने लगे और अपने देश

को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने की छटपटाहट भी महसूस करने लगे। उन कविताओं में यह पश्चाताप भी व्यक्त किया गया था कि क्यों उन्होनें 1857 में अंग्रेजों का साथ दिया।"5 इसके बाद ही जनता में देशभक्ति की भावना प्रबल होती गई और भारत दुर्दशा का बोध अधिकांश रचनाओं में नया रुख ग्रहण कर करवटें बदलने लगा। इस संदर्भ में भारतेंदु की निम्न पंक्तियों को देखा जा सकता है, जो आम जनता के जीवन की करुण त्रासदी, क्रूर औपनिवेशिक शासन एवं नीतियों के नंगे नाच को दर्शाती है-

"उपजा ईश्वर कोप से औ आया भारत बीच।

छार खार सब हिंद करूँ मैं, तो उत्तम, नहिं नीच।

मुझे तुम सहज न जानों जी, मुझे इक राक्षस मानो जी।

कौड़ी-कौड़ी को करूँ मैं सबको मुहताज।

भूखे प्रान निकालूँ इनका, तो मैं सच्चा राज।"5

1857 की सुलगती हुई इस आग को औपनिवेशिक शासकों ने छल, बल और शासन के द्वारा कुचलने का प्रयास किया। औपनिवेशिक शासक एक हद तक इस आग को बुझाने में कामयाब तो रही, लेकिन भारतीय समाज में इसकी अनुगूँज देर तक बनी रही। भले ही ऊपर से दिखाई न देता रहा हो पर चिंगारी तो राख़ के नीचे जिंदा थी। साहित्य में भी यह आग एक चिंगारी के रूप में फैलती रही। खास कर हिंदी कविताओं में इस क्रांति के शहीद वीरों की, नायकों की गाथा जन-मानस के हृदय में प्रज्जवलित होतो रही। जैसे, हिंदी की प्रसिद्ध कवियत्री "सुभद्रा कुमारी चैहान, रामधारी सिंह दिनकर, श्रीकृष्ण सरल (नाना साहब का तीर्थाटन, तात्या टोपे का पराक्रम) राम कवि (स्वातंत्र्य योद्धा कुंवरसिंह प्रशस्ति) पी. एस. वर्मा (1857 का श्आल्हाश्)"6 आदि की कविताओं में देखा जा सकता है। सुभद्रा कुमारी चैहान की कविता 'झाँसी की रानी' की निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं-

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी,

गुमि हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"7

इसी क्रम में 1857 की घटना में कुछ नए नायक जैसे झलकारीबाई, नाना साहब, बेगम हजरत महल, तांत्या टोपे, कुँवर सिंह, मौलवी अहमदउल्ला शाह आदि जुड़े, जो अपनी वीरता के लिए,साहस के लिए इतिहास में दर्ज हुए थे। इनके चरित्र को लेकर हिंदी में अनेक कविताएँ लिखी गईं। जैसे मनोरंजन प्रसाद सिंह की कविता 'बाबू कुँवर सिंह' की निम्न पंक्तियों को देख सकते हैं-

"मस्ती की थी छिड़ी रागिनी, आज़ादी का गाना था,

भारत के कोने-कोने में होता यही तराना था।

उधर खड़ी थी लक्ष्मीबाई और पेशवा नाना था,

इधर बिहारी वीर बाँकुड़ा खड़ा हुआ मस्ताना था।

अस्सी वर्षों की हड्डी में जागा जोश पुराना था,

सब कहते हैं कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था।"8

इस घटना में इतिहासकारों के द्वारा कुछ नये तथ्य भी जुड़े गए। जैसे इस महान संग्राम में सिपाहियों, राजा-रजवाड़ों, सामंतों के अतिरिक्त उस समय औपनिवेशिक शासन से पीड़ित किसान, मजदूर, कारीगर, दलित, स्त्री, आदिवासी एवं मुस्लिम समुदाय के लोग भी शामिल थे। इसके अतिरिक्त इस संग्राम में हिंदू-मुस्लिम, नर-नारी एवं जाति गत भेदभाव को भुलाकर एकत्रित होना आदि तथ्य उद्घाटित हुए। जिसके फलस्वरूप साहित्य के क्षेत्र में न केवल देश की आज़ादी के संदर्भ में कविताएँ लिखीं गई बल्कि सालों से शासन के जंजीरों में जकड़े, शोषित, पीड़ित, दमित किसानों, मजदूरों एवं हाशिए पर पड़े हुए लोगों की मुक्ति के संदर्भ में भी लिखा गया और आज भी लिखा जा रहा है। जैसे, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, मुक्तिबोध, धूमिल आदि की कविताओं में देखा जा सकता है। नागार्जुन 'हरिजन गाथा' कविता में शोषित अर्थात दलितों के संदर्भ में लिखते हैं-

"दिल ने कहा-दलित माँओं के

सब बच्चे अब बागी होंगे

अग्निपुत्र होंगे वे, अन्तिम

विप्लव में सहभागी होंगे।"9

वस्तुतः 1857 के इतिहास की पुनः खोज भरतीया राष्ट्रवादियों के द्वारा भी किया गया था, जिनका उद्देश्य न केवल स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक आदर्श निश्चित करना या उन्हें प्रेरित करना रहा, बल्कि दलित नायकों एवं नायिकाओं के चरित्र को भी उजागर किया और समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव को मिटाने का प्रयास किया। जिसके फल स्वरूप "1960 के बाद दलितों ने 1857 के विद्रोह का अपना आख्यान लिखना प्रारंभ किया। इस आख्यान में अनेक दलित नायकों एवं नायिकाओं यथा झलकारीबाई, उमा देवी, मातादीन भंगी, चेतराम जाटव, बल्लू मेहतर, बाँके चमार और वीरा पासी इत्यादि का आविष्कार किया गया।"10

जैसे झलकारीबाई के संदर्भ में राजकुमार कोरी अपने कीर्तन में कहते है-

"जय झलकारी, दुर्गा, काली,

जय, जय माँ

अंग्रेजों का गरब तूने

चूर चूर किया"11

इसी क्रम में 1990 के बाद झलकारीबाई पर केंद्रित अनेक कविताएँ लिखी गई । अर्चना वर्मा द्वारा रचित निम्न पंक्तियों को देख सकते है-

"मचा झाँसी में घमासान, चहुं ओर मची किलकारी थी।

अंग्रेजों से लोहा लेने रन में कूदी झलकारी थी।"12

इससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्य किसी भी देश के समग्र जीवन का प्रमाणिक दस्तावेज़ होता है। रचनाकारों की संवेदना अपने परिवेश में

केंद्रित होता है, जिसकी परिणति साहित्यिक कृतियों में होती हैं। साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा गया है। अर्थात् देश में जो कुछ घटित होता है, वह न केवल इतिहास में ही प्रतिबिंबित होता है, बल्कि साहित्य में भी प्रतिबिंबित होता है। इतिहासकार इतिहास की इन्हीं बल्कि साहित्य में भी प्रतिबिंबित होता है। इतिहासकार इतिहास की इन्हीं घटनाओं को क्रमबद्ध करता है और साहित्यकार अपनी रचनाओं में उन घटनाओं के अंदर के सत्य को बताता है। इतिहास यदि संस्कृति को अंकित करती है तो साहित्य उसे अभिव्यक्ति देती है। अर्थात साहित्य में इतिहास की घटनाओं का, पत्रों का एक तरह से पुनर्जन्म होता है।

सन्दर्भ

1 इतिहास दर्शन, परमानंद सिंह, मोतीलाल बनरसीदास पब्लिशर्स, 2005

2 साहित्य सेतु ई-पत्रिका, अंक 14, मार्च-अप्रेल 2013

3 अनभै साँचा, 1857 बगावत का दौर, जुलाई-दिसंबर 2007 पृ.41

4 वही, पृ.82

5 वही, पृ.196

6 www-kranti1857-org@poem&of&1857-php

7 अनभै साँचा, 1857 बगावत का दौर, जुलाई-दिसंबर 2007 पृ.174

8 वही, पृ.179

9 नागार्जुनरू रचना प्रसंग और दृष्टि, पृ.46

10 आलोचना, जुलाई-दिसंबर 2002, पृ.167

11 वही, पृ.167

12 वही, पृ.168